प्रथम अध्यक्षता और भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, जनवरी 2013

प्रथम अध्यक्षता संदेश, जनवरी 2013

प्रभु की आवाज

अध्यक्ष हेनरी बी. आईरिंग द्वारा

प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

सिद्धान्त और अनुबन्ध सभी जगह सभी लोगों को प्रभु यीशु मसीह की आवाज को सुनने को आमन्त्रित करती है (देखें सि और अनु :2,4,11,34;25:16 । यह उसके सन्देशों, चेतावानियों, और चुने हुए भविष्यवक्ताओं के द्वारा दिये गये प्रोत्साहन प्रकटीकरण उपदेशों से भरी हुई है । इन प्रकटीकरणों में हम देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर हमारी विश्वासी प्रार्थनाओं का जवाब सन्देशों में निर्देश देकर, शान्ति से, और चेतावानियो के साथ देता है ।

हम अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर हम से क्या करवाना चाहता है, हमें इस और आनेवाले जीवन में शान्ति और आनन्द पाने के लिए क्या करना चाहिये, और हमारे लिये आगे क्या रखा है, को खोजते हैं । सिद्धान्त और अनुबन्ध आम लोगों के द्वारा पूछे गये ऐसे प्रश्नों के उत्तर और भविष्यवक्ताओं की न्रम प्रार्थनाओ के जवाबों से भरी है । यह एक बहुमुल्य मार्गदर्शन हो सकती है जो हमें सीखाती है कि कैसे हम सांसारिक कुशलक्षेम और अनन्त उद्धार के विषय के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त सकते हैं ।

यीशु मसीह में विश्वास और विनम्रता महत्वपूर्ण हैं । ऑलिवर कॉउड्री ने प्रभु की ओर से मॉरमन की पुस्तक के अनुवाद में मदद करने की अपनी इच्छा के विषय में जानने के लिए उत्तर प्राप्त किया :

"याद रहे कि बिना विश्वास के हम कुछ नहीं कर सकते : इसलिये विश्वास से पूछो । इन बातों को हल्के में न ले; उनके लिए न पूछे जिस की आप कामना न करते हो" (सि. और अनु 8:10)।

सिद्धान्त और अनुबन्ध में बार बार दिया है, प्रभु को विश्वास और नम्रता की जरुरत होती है इससे पहले वह अपनी सहायता दे । एक कारण इसका यह भी है कि शायद उसका जवाब जैसा हम चाहते हैं उस तरह से न मिले । ना ही हमेशा से यह ग्रहण करना आसान होगा ।

गिरजे का इतिहास और हमारे पूर्वजों के अनुभव इस सच्चाई को दर्शाते हैं । मेरे परदादा हेनरी आईरिंग ने जानने के लिये प्रार्थना की कि जब वह 1855 में पुनस्थापित सुसमाचार सीखाया जाने के वारे में सुनो तब उन्हें क्या करना चाहिए । एक सपने में जवाब आया था ।

उन्होंने स्वपन देखा कि वह बाहर प्रेरितो के परिषद एलडर ऐराटस स्नो और एक एलडर विलियम ब्राउन नामक के साथ मेज पर बैठे थे । एलडर स्नो ने सुसमाचार के नियमों को सिखाया था जो लगभग एक घण्टा तक चला था । जब एलडर स्नो ने कहा, यीशु मसीह के नाम में मैं तुम्हें वपतिस्मा देता हूंऔर यह व्यक्ति ... [एलडर ब्राउन] आपको बपतिस्ना देते हैं ।" 1

मेरा परिवार आभारी है कि हेनरी आईरिंग के पास विश्वास और नम्रता थी बपतिस्मा लेने की सुबह 7:30 सन्त लुईस मिसुरी बारिश से भरे तलाब में, सयुक्त राष्ट्र, में एलडर ब्राउन द्वारा ।

प्रभु की आवाज में उसकी प्रार्थना का जवाब नहीं आया था । यह दिव्यदर्शन और रात में स्वपन के द्वारा आया था, जैसे लेही के साथ हूआ था (देखें 1 नेफी 8:2)।

प्रभु ने हमें सीखाया था कि जवाब एहसासों से भी आ सकता है । सिद्धान्त और अनुबन्ध में, उसने ओलिवॅर कॉउड्री को शिक्षा दी, "देखो मैं तुम्हें तुम्हारे मन में और हृदय में, पवित्र आत्मा के द्वारा बताऊंगा, जो तुम्हारे ऊपर आता है और जो तुम्हारे हृदय में निवास करता है"(सि.और अनु.8:2) ।

और वह ओलिवॅर को इस तरह प्रोत्सहित करता है : "

क्या मैंने तुम्हारे मन में शान्ति के विषय के प्रति वार्ता नहीं की ? परमेश्वर की ओर से तुम्हें इससे महान साक्षी और क्या मिल सकती है ?" (सि और अनु 6:23)।

सिद्धान्त और अनुबन्ध, गिरजाघर इतिहास, और हेनरी आईरिंग द्वारा बपतिस्मे के तुरंत बाद अपने मिशन के दौरान रखे गए इतिहास ने मुझे सीखाया था कि उत्तर चेतावनी के साथ साथ शान्ति भी महसूस करा सकता है ।

1857अप्रैल में, एलडर पॉर्ले पी. प्रैट बाहर प्रेरितों के परिषद के एक सम्मेलन में शामिल हुए जो अब ओकोहोमा है, सयुंक्त राष्ट्र

में, हेनरी आईरिंग ने लिखा था कि एलडर प्रैट का "दिमाग अंधकारमय के पूर्वाभास से भरा हुआ था... ,भविष्य को न जानते हुए या बचने का कोई रास्ता नहीं था ।"2

हेनरी ने तुरन्त प्रेरित की हत्या के बाद दुखित समाचार लिखा था । एलडर प्रैट खतरा होने के बवाजूद अपनी यात्रा में आगे बढ़ते रहे, वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कर्थेज में किया था ।

यह मेरी गवाही है कि प्रभु विश्वास से की गई विनम्र प्रार्थना का उत्तर हमेशा देता है । सिद्धान्त और अनुबन्ध और हमारे व्यक्तिगत अनुभव सीखाते हैं कि कैसे हमें उन उत्तर को पहचानना और उनको विश्वास में ग्रहण करना है, चाहे वे निर्देशे हों, सच्चाई को प्रमाणित करते हों, या एक चेतावानी हों । मैं प्रार्थना करता हूं कि हम प्रभु की प्रिय आवाज को हमेशा के लिये सुनेगें और पहचानेगें ।

विवरण

1. "The Journal of Henry Eyring: 1835–1902" (unpublished manuscript in author's possession) ।

2. "The Journal of Henry Eyring: 1835–1902 ।"

इस संदेश से शिक्षा का

इस सन्देश में प्रार्थना पर दिये अनुच्छेद के बारे में एकसाथ अध्ययन करें । जैसे आप पढ़ते हैं, परिवार को ध्यान से सुनने को कहें कि कैसे परमेश्वर प्रार्थना का जवाब देता है । प्रार्थना के महत्व की गवाही पर विचार करें ।

सिद्धान्त और अनुबन्ध प्रार्थना में लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तरो से भरा हुआ है । क्या होता यदि उनके प्रश्नों के उत्तरों को (प्रकटीकरण) नहीं लिखा गया होता ? परिवार को आत्मा के प्रोत्साहन को पहचानने और अनुगमन करने को प्रोत्साहित करें । वे चाहे उनके दैनिकी में प्रार्थना के बारे में विचारों का लिख सकते हैं ।

प्रोत्साहन के लिए सुनना

मरिया ईसाबल मोलिना द्वारा

एक रात मेरी युवा संबंधी घर से भाग गई, तो मैं तुरन्त उस देखेने के लिये गई । जब मैं गाड़ी चला रही थी, मैंने प्रार्थना में आत्मा से सहायता मांगी । मैं जानती थी कि परमेश्वर मुझे जवाब और निर्देशन देगें, और मैं आत्मा के प्रोत्साहन को सुनने की कोशिश करने लगी । परन्तु जब मैं कुछ सुन न सकी, मुझे निराशा का एहसास शुरु होने लगा और महसूस किया कि आत्मा मुझे प्रोत्साहित नहीं कर रही है ।

ऐसा होने पर भी मैं खोजने को आगे बढ़ना चाहती थी, मुझे महसूस हुआ कि मुझे संबंधी के घर ही के क्षेत्र के आस पास ही रहना चाहिये । तो मैंने एक बार फिर से क्षेत्र के आसपास ही चक्कर लगने का निर्णाय लिया । जैसे मैं चौराहे पर रुकी, मैंने एक युवती को रास्ते के किनारे चलते हुए देखा । मैंने अपने संबंधी को ख़ोज लिया था ।

जैसे मैं कार से बाहर आई और उसकी ओर भागी, मैंने वास्तविकता में जाना कि आत्मा पूरे रास्ते मुझे निर्देश देती और मुझे उसी क्षेत्र में रहना चाहिए के लिए मेरी मदद करती रही । क्योंकि मैंने शान्त स्वर को सुना था, मैंने लगभग आत्मा के प्रोत्साहन को नकारा था । मैंने तब समझा कि कई बार हम आवाज को नहीं सुनेगें, परन्तु हम अपने हृदयों में प्रभाव को महसूस करेगें ।

मैं आत्मा के मार्गदर्शन के लिय धन्यवाद करती हूं । सच में वह हमेशा यहां है ! जैसे धर्मशास्त्र कहता है, कि पवित्र आत्मा हमेशा तुम्हारी सहभागी होगी " (सि और अनु 121:46) ।

यदि हम आत्मा के मार्गदर्शन के लिये योग्य हैं और हम ध्यान देते हैं हम परमेश्वर के हाथ में बहुत से लोगों के लिए अच्छा करने के लिए औज़ार हो सकते हैं । आत्मा के हमेशा के सहभागिता के साथ, हम जानेगें हमें किस रास्ते जाना चाहिये ।

एक रोंमाचक प्रार्थना

अध्यक्ष आईरिंग ने सीखाया कि प्रार्थना का जवाब कई विभिन्न तरीकों से हो सकता है । आप इन के कुछ रोंमाचक तरीको को धर्मशास्त्रों में खोजकर पा सकते हैं । नीचे दिये प्रत्येक धर्मशास्त्र को देखें । अपनी दैनिकी में, प्रार्थना के जवाब के विषय में यह धर्मशास्त्र क्या कहते है के कुछ शब्दों का वर्णन लिखें ।

आप अपनी दैनिकी में अपने खुद के प्रार्थना के उत्तर पाने के अनुभवों को भी लिख सकते हैं ।

यहून्ना 14:26

सिद्धान्त और अनुबन्ध 6:22–23

सिद्धान्त और अनुबन्ध 8:2

सिद्धान्त और अनुबन्ध 9:8–9

नीतिवचन 8:10–11

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/12 । अनुवाद अनुमतिः 6/12 । First Presidency Message, January 2013का अनुवाद । Hindi । 10661 294

भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, जनवरी 2013
प्रचारकों काय

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और, जैसा उचित हो, उन बहनों के साथ इसकी चर्चा करें जिन से आप भेंट करती हैं । अपनी बहनों को मजबूत करने और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें ।

अधिक सूचना के लिए, www.reliefsociety.lds.org पर जाएं ।

अन्तिम दिनों के सन्तों को आगे भेजा गया "कि [प्रभु के] बाग़ीचे में मनुष्यों की आत्मा के उद्धार लिए कार्य करें "(सि और अनु 138:56), जिस में प्रचारक कार्य शामिल है । हमें सुसमाचार बांटने को औपचारिक मिशन बुलाहट की जरुरत नहीं है । अन्य जो हमारे आस पास रहते है सुसमाचार से आशीषित हो पाएगें, जैसे हम अपने आपको तैयार करते हें, प्रभु हमें उपयोग करेगा । भेंट करनेवाली शिक्षिका अपनी आत्मिक जिम्मेदारियां को अपनाती है और "मनुष्य को अनन्त जीवन और आनाश्वरता में लाने में"(मूसा 1:39) मदद करती है ।

जब जोसफ स्मिथ ने 1842 में, सहायता संस्था स्थापित की थी, उन्होंने कहा था कि महिलाएं न सिर्फ जरुरतमन्दों को देखभाल करती है परन्तु आत्मा भी बचती है । 1 आज भी यही हमारा उदेश्य है ।"प्रभु ... सच्चाई की गवाही को उनके सुपुर्द करता है जो दूसरो के साथ बाटंगें," अध्यक्ष डिएटर एफ.उक्डोर्फ, प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार, ने कहा था । "यहां तक, प्रभु चाहता कि उसके गिरजे के सदस्य हर समय अपना मुंह खोलें, [उसके] सुसमाचार को आनन्द के स्वर के साथ घोषित करें" (सि और अनु 28:16)

कभी कभी गवाही की एकमात्र पक्ति जीवन को लेय में ला सकती है जो किसी के जीवन को अनन्तता के लिए प्रभावित करें । "2 धर्मशास्त्रों से सिद्धान्त और अनुबन्ध 1:20–23; 18:15; 123:12

हमारे इतिहास से

ओल्गा कोवारोवा पूर्व चेकोस्लोवेकिया की सदस्य प्रचारिका होने की कहानी हमारे सहायता संस्था इतिहास में एक उदाहरण है । ओल्गा सन 1970 में, एक चिकित्सक छात्रा थी और आत्मिक जीवन को गहराई से जानने की इच्छुक थी । उसने 75 वर्ष के अन्तिम दिनों के एक सन्त पर ध्यान दिया । उसने कहा की वह मुझे पिछतर साल के लगते थे परन्तु उनके हृदय से वह आठरह वर्ष के पूरे आनन्द से भरे हूए थे, उसने कहा था । चेकोस्लोवेकिया के उस निराशावाद के समय में यह बहुत असामान्य था ।

ओल्गा ने ओटकार और उसके परिवार से पूछा कि उन्हें कैसे आनन्द मिलता है । उन्होंने उसे गिरजे के दूसरे सदस्यों से मिलवाया और उसे मॉरमन की एक पुस्तक थी । उसने उसे उत्साह से पढ़ा और जल्द ही बपतिस्मा और पुष्टीकरण ले लिया था । तभी से ओल्गा ने राजनीतिक विरोध और धार्मिक यातनाओं के बवाजूद संसार में अच्छा करने के लिये प्रभावित हुई । अपनी छोटी सी शाखा में उन्होंने सहायता संस्था की अध्यक्षा के रुप में सेवा की और मसीह के पास लाने के द्वारा उन्होंने दूसरों की आत्माओं को बचाने में मदद की थी । 3

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. क्या मैं पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं का अनुसरण करती हूं जब मैं अपनी गवाही उस बहन जिसे में भेंट करती हूं ?

2. कैसे मैं उन बहनों के सुसमाचार सीखने पर ध्यान देकर सहायता करती हूं ?

विवरण

1. देखें *Teachings of Presidents of the Church: Joseph Smith* (2007), 453 ।

2. Dieter F. Uchtdorf, "Waiting on the Road to Damascus," लियाहोना, मई 2011, 76–77 ।

3. देखें *Daughters in My Kingdom: The History and Work of Relief Society* (2011), 92–95 ।

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/12 । अनुवाद अनुमतिः 6/12 । Visiting Teaching Message, January 2013 का अनुवाद । Hindi । 10661 294